DSSSB TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR With ANKIT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

Demo-03

संज्ञा प्रकरण

Part-03

LIVE 14-03-2024 05:00 PM

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT (संस्कृत)
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
FEATURES
Live Classes
Mock Test
Doubt Group
Class Notes PDF
Experienced Teachers
₹999/-
20% off
Coupon Code: SAN20
₹799/-
Registration Starts from 6th March
Classes Start from 11th March
JOIN US ON
DOWNLOAD THE RWA APP NOW
Google Play

① (क्) वर्ण का बाह्य प्रयत्न होगा ? ③

विवार श्वास अघोष अल्पप्राण

② ज् वर्ण का बाह्य प्रयत्न ?

संवार नाद घोष अल्पप्राण

संहितासंज्ञाविधायकं संज्ञासूत्रम्

परः सन्निकर्षः संहिता

वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात् ।

वर्णों की अत्यन्त सन्निधि संहितासंज्ञक होती है अर्थात् वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं।

प्रति + एक = प्रत्येक

संयोगसंज्ञाविधायकं संज्ञासूत्रम्

हलोऽनन्तराः संयोगः

अचों से अव्यवहित हल् संयोगसंज्ञक होते हैं।

कृष्णः = क् + ऋ + ष् + ण् + अ + :

पुष्प : प् + उ + ष् + प् + अ

वृद्धि संज्ञा

वृद्धिरादैच्

वृद्धिः आत् ऐच्

आ , ऐ , औ

गुण संज्ञा

गुण संज्ञा विधायक

गुण संधि विधायक सूत्र

अदेङ् गुणः

अत् एङ् गुणः

अ ए ओ (गुण)

प्रगृह्य संज्ञा

ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

ईत् ऊत् एत् | द्विवचनं प्रगृह्यम्

ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त शब्द जो द्विवचनान्त होते हैं, उनकी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

उदा० - हरी, कवी, साधू, विष्णू, गङ्गे, लते
(हरि) (कवि)

'घ' संज्ञा

~~तरप्तमपौ घः~~

तरपतमपौ घः

तरप् और तमप् प्रत्यय की घ संज्ञा होती है।

तरप् → तुलनात्मक

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

निष्ठा संज्ञा

क्क्तवतू निष्ठा

क्तक्तवतू निष्ठा

क्त औ क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होः है।

भूतकाल

वान् वती वत्

गम् + क्त

गतः, गता, गतम्

सत् संज्ञा

तौ सत्

शतृ और शानच् प्रत्ययों की सत् संज्ञा होती है।

वर्तमान काल

सूत्रार्थ- शतृ एवं शानच् इनकी सत् संज्ञा होती है।

विभाषा संज्ञा

न वेति विभाषा

न वा इति विभाषा

न → निषेध

वा → विकल्प

सम्प्रसारण संज्ञा

इग्यणः सम्प्रसारणम्

सम्प्रसारण

यण् → य् व् र् ल्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

इक् → इ उ ऋ ऌ

टि संज्ञा

अचोऽन्त्यादि टि

अंतिम अच् से परे (बाद में) वर्ण समुदाय की टि संज्ञा होती है।

मनस् = म् + अ + न् + अ + स् = अस्

राजन् = अन्

दोधी = ई

उपधा संज्ञा

अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा

अंतिम वर्ण से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

मनस् = म् + अ + न् + अ + स् = अ

आत्मन् = अ उपधा उपधा उपधा

दाधि = द् + अ + ध् + इ = ध्

❖ व्याकरण के सूत्रों की ६ श्रेणियाँ है अर्थात् ६ प्रकार के सूत्र होते हैं।

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च ।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥

१ - संज्ञासूत्र, २- परिभाषासूत्र, ३- विधिसूत्र, ४- नियमसूत्र, ५- अतिदेशसूत्र और ६ - अधिकारसूत्र ।

१ - संज्ञासूत्र जो सूत्र संज्ञाओं का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र संज्ञासूत्र या संज्ञाविधायक सूत्र कहलाते हैं। जैसे- हलन्त्यम्, अदर्शनं लोपः, तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् आदि ।

२- परिभाषासूत्र जो अनियम होने पर नियम करते हैं, ऐसे सूत्र परिभाषासूत्र कहलाते हैं। जैसे- स्थानेऽन्तरतरमः, यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्, अनेकाल्शित् सर्वस्य आदि ।

३ - विधिसूत्र जो सूत्र यण्, गुण, वृद्धि, दीर्घ, प्रत्यय, आदेश आदि का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र विधिसूत्र कहलाते हैं। जैसे- इको यणचि, एचोऽयवायावः, आद्गुणः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः आदि ।

४- नियमसूत्र किसी सूत्र के द्वारा कार्य सिद्ध होते हुए उसी कार्य के लिए यदि किसी अन्य सूत्र को पढ़ा गया हो तो वह सूत्र नियमसूत्र कहलाता

५- अतिदेशसूत्र जो वैसा नहीं है, उसे वैसा मानना अतिदेश है। जैसे कि शिष्य जो गुरु नहीं है, अब उसे गुरु के तुल्य माना जाय ।

६ - अधिकारसूत्र कुछ सूत्र ऐसे होते हैं जो अपने क्षेत्र में कोई कार्य नहीं करते किन्तु अन्य सूत्रों के क्षेत्र में अपना अधिकार रखते हैं, उसके सहायक बनते हैं। ऐसे सूत्र अधिकारसूत्र हैं।